मर्द व औरत दोनों के लिये मुफ़ीद रिसाला

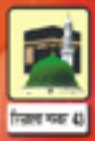

Zakhmi Saanp (Hindi)

ज़ख़्मी सांप

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرَف ج١ ص٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ज़ख़्मी सांप

येह रिसाला (**ज़ख़्मी सांप**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

ज़ख़्मी सांप

शैतान लाख सुस्ती दिलाए मगर आप येह रिसाला (19 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये और इस की ब-र-कतें ह़ासिल कीजिये ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

दो[2] जहां के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है **:** मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना पुल सिरात़ पर नूर है जो रोज़े जुमुआ मुझ पर **अस्सी** बार दुरूदे पाक पढ़े उस के **अस्सी साल** के गुनाह मुआफ़ हो जाएंगे ।

(اَلْفِرْدَوْس بمأثور الْخِطاب ج۲ص۴۰۸ حدیث۳۸۱٤)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू सईद ख़ुदरी** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं **:** एक नौ जवान सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की **नई नई शादी** हुई थी । एक बार जब वोह अपने घर तशरीफ़ लाए तो देखा कि उन की दुल्हन घर के दरवाज़े पर खड़ी है, मारे जलाल के नेज़ा तान कर अपनी दुल्हन की त़रफ़ लपके । वोह घबरा कर पीछे हट गई और (रो कर) पुकारी **: मेरे सरताज !** मुझे मत मारिये, मैं बे क़ुसूर हूं, ज़रा घर के अन्दर चल कर देखिये कि किस चीज़ ने मुझे बाहर निकाला है ! चुनान्चे वोह सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अन्दर तशरीफ़ ले गए, **क्या देखते हैं कि एक ख़त़रनाक**

ज़हरीला सांप कुंडली मारे बिछोने पर बैठा है। बे क़रार हो कर सांप पर वार कर के उस को नेज़े में पिरो लिया। सांप ने तड़प कर उन को डस लिया। **ज़ख़्मी सांप** तड़प तड़प कर मर गया और वोह ग़ैरत मन्द सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ भी सांप के ज़ह्र के असर से जामे शहादत नोश कर गए। **(مُسلِم ص۱۲۲۸ حدیث۲۲۳۶ مُلَخَّصاً)**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ग़ैरत मन्द इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? हमारे सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان किस क़दर बा मुरव्वत हुवा करते थे। उन्हें येह तक भी मन्ज़ूर न था कि उन के घर की औ़रत घर के दरवाज़े या खिड़की में खड़ी रहे। अपनी ज़ौजा को बना संवार कर बे पर्दगी के साथ शादी हॉल में ले जाने वालों, बे पर्दगी के साथ स्कूटर पर पीछे बिठा कर फिराने वालों, शॉपिंग सेन्टरों और बाज़ारों में बे पर्दगी के साथ ख़रीदारी से न रोकने वालों के लिये इ़ब्रत ही इ़ब्रत है।

औ़रत ख़ुश्बू लगा कर बाहर न निकले

मुस्तफ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : बेशक जो औ़रत ख़ुश्बू लगा कर मजलिस के पास से गुज़रे तो वोह ऐसी ऐसी है या'नी ज़ानिया है। **(تِرمِذی ج٤ ص٣٦١ حدیث٢٧٩٥)**

मुफ़स्सिरे शहीर, **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : क्यूं कि वोह उस ख़ुश्बू के ज़रीए लोगों को अपनी त़रफ़ माइल करती है चूंकि इस्लाम ने ज़िना को ह़राम किया इस लिये ज़िना के अस्बाब से (भी) रोका (है)।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 172)

बे पर्दगी की होलनाक सज़ा

हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन **हजर मक्की शाफ़ेई** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى नक़्ल फ़रमाते हैं : मे'राज की रात सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जो बा'ज़ औरतों के अज़ाब के होलनाक मनाज़िर मुला-हज़ा फ़रमाए उन में येह भी था कि एक औरत बालों से लटकी हुई थी और उस का दिमाग़ खौल रहा था । सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा शफ़्क़त में अर्ज़ की गई कि येह औरत अपने बालों को ग़ैर मर्दों से नहीं छुपाती थी ।

(الزّوَاجِرُ عَنِ اقْتِرَافِ الْكَبَائِر ج ۲ ص ۹۷-۹۸ مُلَخَّصاً)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़ौफ़नाक जानवर

ग़ालिबन शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1414 सि.हि. का आख़िरी जुमुआ़ था । रात को कोरंगी (बाबुल मदीना कराची) में मुन्अ़क़िद होने वाले एक अ़ज़ीमुश्शान सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में एक नौ जवान से सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ (राक़िमुल हुरूफ़) की मुलाक़ात हुई । उस पर ख़ौफ़ त़ारी था, उस ने ह़लफ़िया बयान दिया कि मेरे एक अ़ज़ीज़ की जवान बेटी अचानक फ़ौत हो गई । जब हम तदफ़ीन से फ़ारिग़ हो कर पलटे तो मर्हूमा के वालिद को याद आया कि उस का एक हेंड बेग जिस में अहम काग़ज़ात थे वोह ग़-लत़ी से मय्यित के साथ **क़ब्र** में दफ़्न हो गया है । चुनान्चे ब अम्रे मजबूरी दोबारा **क़ब्र** खोदनी पड़ी, जूं ही हम ने **क़ब्र** से सिल हटाई ख़ौफ़ के मारे हमारी चीख़ें निकल गईं क्यूं कि **जिस जवान लड़की को अभी अभी हम ने सुथरे कफ़न में लपेट कर सुलाया था वोह कफ़न फाड़**

कर उठ बैठी थी और वोह भी कमान की त़रह़ टेढ़ी ! आह ! उस के सर के बालों से उस की टांगें बंधी हुई थीं और कई छोटे छोटे ना मा'लूम ख़ौफ़नाक जानवर उस से चिमटे हुए थे । येह दह्शत नाक मन्ज़र देख कर ख़ौफ़ के मारे हमारी घिग्गी बंध गई और हेंड बेग निकाले बिग़ैर जूं तूं मिट्टी फेंक कर हम भाग खड़े हुए। घर आ कर मैं ने अ़ज़ीज़ों से उस लड़की का जुर्म दरयाफ़्त किया तो बताया गया कि उस में कोई फ़ी ज़माना मा'यूब समझा जाने वाला जुर्म तो नहीं था, अलबत्ता येह भी आ़म लड़कियों की त़रह़ फ़ेशन एबल थी और पर्दा नहीं करती थी। अभी इन्तिक़ाल से चन्द रोज़ पहले रिश्तेदारों में शादी थी तो इस ने फ़ेशन के बाल कटवा कर बन संवर कर आ़म औ़रतों की त़रह़ शादी की तक़रीब में बे पर्दा शिर्कत की थी।

ऐ मेरी बहनो ! सदा पर्दा करो तुम गली कूचों में मत फिरती रहो
वरना सुन लो क़ब्र में जब जाओगी सांप बिच्छू देख कर चिल्लाओगी

कमज़ोर बहाने

क्या उस बद नसीब फ़ेशन परस्त लड़की की दास्ताने ग़म निशान पढ़ कर हमारी वोह इस्लामी बहनें दर्से इ़ब्रत ह़ासिल नहीं करेंगी जो शैत़ान के उक्साने पर इस त़रह़ के ह़ीले बहाने करती रहती हैं कि मेरी तो मजबूरी है, हमारे घर में कोई पर्दा नहीं करता, ख़ानदान के रवाज को भी देखना पड़ता है, हमारा सारा ख़ानदान पढ़ा लिखा है, सादा और बा पर्दा लड़की के लिये हमारे यहां कोई रिश्ता भी नहीं भेजता। बस दिल का पर्दा होता है, हमारी निय्यत तो साफ़ है वग़ैरा वग़ैरा। क्या ख़ानदानी रस्मो रवाज और नफ़्स की मजबूरियां आप को अ़ज़ाबे क़ब्र व जहन्नम

से नजात दिला देंगी ? क्या आप बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में इस त़रह़ की खोखली मजबूरियां बयान कर के छुटकारा ह़ासिल करने में काम्याब हो जाएंगी ? अगर नहीं और वाक़ेई नहीं तो फिर आप को हर ह़ाल में बे पर्दगी से तौबा करनी पड़ेगी। याद रखिये ! लौह़े मह़फ़ूज़ पर जिस का जहां जोड़ा लिखा होता है वहीं शादी होती है। वरना आए दिन कई पढ़ी लिखी मॉडर्न कंवारी लड़कियां पलक झपक्ते में मौत का शिकार हो कर रह जाती हैं बल्कि बा'ज़ अवक़ात ऐसा भी होता है कि दुल्हन अपनी ''रुख़्सती'' से क़ब्ल ही मौत के घाट उतर जाती है और उसे रोशनियों से जग-मगाते, ख़ुश्बूएं महकाते ह़-ज-लए अ़रूसी में पहुंचाने के बजाए कीड़े मकोड़ों से लबरेज़ तंगो तारीक **क़ब्र** में उतार दिया जाता है।

तू ख़ुशी के फूल लेगी कब तलक ?
तू यहां ज़िन्दा रहेगी कब तलक ?

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पचास साठ सांप

1986 सि.ई. के जंग अख़्बार में किसी दुख्यारी मां ने कुछ इस त़रह़ बयान दिया था **:** मेरी सब से बड़ी लड़की का ह़ाल ही में इन्तिक़ाल हुवा है, उसे दफ़्न करने के लिये जब **क़ब्र** खोदी गई तो देखते ही देखते उस में **पचास साठ सांप** जम्अ़ हो गए ! दूसरी **क़ब्र** खुदवाई गई उस में भी वोही सांप आ कर कुंडली मार कर एक दूसरे पर बैठ गए। फिर तीसरी **क़ब्र** तय्यार की उस में उन दोनों क़ब्रों से ज़ियादा सांप थे। सब लोगों पर दह़शत सुवार थी, वक़्त भी काफ़ी गुज़र चुका था, नाचार बाहम मश्वरा कर के मेरी प्यारी बेटी को **सांपों भरी क़ब्र** में दफ़्न कर के लोग

दूर ही से मिट्टी फेंक कर चले आए। मेरी मर्ह़ूमा बेटी के अब्बाजान की क़ब्रिस्तान से मकान आने के बा'द ह़ालत बहुत ख़राब हो गई और वोह ख़ौफ़ के मारे बार बार अपनी गरदन झटक्ते थे। दुख्यारी मां का मज़ीद बयान है कि मेरी बेटी यूं तो नमाज़ व रोज़ा की पाबन्द थी मगर वोह **फ़ेशन** किया करती थी। मैं उसे मह़ब्बत से समझाने की कोशिश करती थी मगर वोह अपनी आख़िरत की भलाई की बातों पर कान धरने के बजाए उलटा मुझ पर बिगड़ जाती और मुझे ज़लील कर देती थी। अफ़्सोस मेरी कोई बात मेरी नादान मॉडर्न बेटी की समझ में न आई।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़ौफ़नाक गढ़ा

हो सकता है शैत़ान किसी को वस्वसा डाले कि येह अख़्बारी वाक़िआ़ है क्या मा'लूम येह सच्चा भी है या नहीं ? बिलफ़र्ज़ येह ग़लत़ हो भी तो ग़ैर शर-ई **फ़ेशन परस्ती** और **बे पर्दगी** का जाइज़ होना भी तो कोई साबित नहीं कर सकता। ह़दीसे पाक में ना जाइज़ फ़ेशन का अ़ज़ाब मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये। सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : मैं ने कुछ लोग ऐसे देखे जिन की खालें **आग की क़ैंचियों** से काटी जा रही थीं। मेरे इस्तिफ़्सार पर बताया गया, येह वोह लोग हैं जो ना जाइज़ अश्या से ज़ीनत ह़ासिल करते थे। और मैं ने एक **गढ़ा** भी देखा जिस में से चीख़ो पुकार की आवाज़ें आ रही थीं। मेरे दरयाफ़्त करने पर बताया गया, येह वोह औ़रतें हैं जो ना जाइज़ अश्या के ज़रीए ज़ीनत किया करती थीं। (تاریخ بغداد ج۱ ص۴۱۵) **याद रखिये !** नेल पॉलिश की तह नाख़ुनों

पर जम जाती है लिहाज़ा ऐसी ह़ालत में वुज़ू करने से न वुज़ू होता है न नहाने से ग़ुस्ल उतरता है, जब वुज़ू व ग़ुस्ल न हो तो नमाज़ भी नहीं होती।

ख़बरदार !

हरगिज़ हरगिज़ शैत़ान के इस बहकावे में मत आइये। जैसा कि बा'ज़ नादान लोग इस त़रह़ कहते सुनाई देते हैं कि दुन्या तरक़्क़ी कर गई है। مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ चादर और चार दीवारी तो इन्तिहा पसन्द मुसल्मानों का ना'रा है, अब तो मर्दों और औ़रतों को शाने से शाना मिला कर काम करना चाहिये वग़ैरा। यक़ीनन एक मुसल्मान के लिये क़ुरआन की दलील काफ़ी होती है। लिहाज़ा दिल की आंखों से क़ुरआने पाक की येह आयते करीमा पढ़िये :

وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى

(پ ۲۲، الاحزاب: ۳۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अपने घरों में ठहरी रहो और बे पर्दा न रहो जैसे अगली जाहिलिय्यत की बे पर्दगी।

आयते बाला बाज़ारों और शॉपिंग सेन्टरों में बे पर्दगी के साथ आने जाने वालियों, ख़ुद को मख़्लूत़ तफ़रीह़ गाहों की ज़ीनत बनाने वालियों, मख़्लूत़ ता'लीमी इदारों में ता'लीम पाने वालियों, स्कूल या कॉलेज में ना मह़रम उस्तादों से पढ़ने और ना मह़रमों को पढ़ाने वालियों, दफ़्तरों, कारख़ानों, शिफ़ाख़ानों और मुख़्तलिफ़ इदारों में मर्दों के साथ बे पर्दा या ख़ल्वत (या'नी तन्हाई) में या अन्देशए फ़ितना होने के बा वुजूद मिलजुल कर काम करने वालियों को दा'वते फ़िक्र दे रही है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बेटा गया तो क्या हुवा, ह़या तो बाक़ी है

बा ह़या ख़्वातीन ख़्वाह कुछ भी हो जाए बे पर्दगी नहीं किया करतीं जैसा कि सय्यि-दतुना उम्मे ख़ल्लाद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا पर्दा किये मुंह पर निक़ाब डाले अपने शहीद फ़रज़न्द की मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये बारगाहे सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हुईं। किसी ने कहा : आप इस ह़ालत में बेटे की मा'लूमात ह़ासिल करने आई हैं कि आप के चेहरे पर निक़ाब पड़ा हुवा है ! कहने लगीं : **''अगर मेरा बेटा जाता रहा तो क्या हुवा मेरी ह़या तो नहीं गई।''**

(سُنَنِ ابوداوٗد ج ۳ ص ۹ حدیث۲٤۸۸ مُلَخَّصاً)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

बे पर्दगी कोई छोटी मुसीबत नहीं !

इस ह़िकायत से हमारी वोह इस्लामी बहनें दर्स ह़ासिल करें कि जो बे पर्दगी के लिये त़रह़ त़रह़ के बहाने तराशती हैं। कोई कहती है : क्या करूं मैं तो बेवा हूं, कोई कहती है : बच्चों का पेट पालने के लिये दफ़्तर में ग़ैर मर्दों के साथ बे पर्दगी या ख़ल्वत (या'नी तन्हाई) में या अन्देशए फ़ितना होने के बा वुजूद नोकरी करनी पड़ गई है, ह़ालां कि हुसूले मआ़श के लिये कोई घरेलू कस्ब भी मुम्किन था, लेकिन ''म-दनी सोच'' कहां से लाएं ! क्या पहले की बा पर्दा ख़्वातीन बेवा नहीं होती थीं ? उन पर मुसीबतें नहीं पड़ती थीं ? क्या असीराने करबला رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم पर आफ़तों के पहाड़ नहीं टूटे थे ? क्या مَعَاذَاللهِ عَزَّوَجَلَّ करबला वाली इफ़्फ़त मआब बीबियों رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ ने पर्दा तर्क किया था ? नहीं और हरगिज़ नहीं तो फिर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

मेह्‌रबानी फ़रमा कर अपनी ना तुवानी पर तर्स खाइये और अपने कमज़ोर वुजूद को **क़ब्र** व जहन्नम के अ़ज़ाब से बचाने की ख़ातिर पर्दा इख़्तियार कीजिये। ख़ुदा की क़सम! वोह बे पर्दगी छोटी मुसीबत नहीं हो सकती जो कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के अ़ज़ाब में फंसा कर रख दे। وَالعِيَاذُ بِاللّٰهِ تَعَالٰی

31 म-दनी फूलों का गुलदस्ता

《1》 **हमारे** मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم औ़रत का हाथ, हाथ में लिये बिग़ैर फ़क़त़ ज़बान से बैअ़त लेते थे।

(मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 446)

मुरी-दनी पीर साह़िब का हाथ नहीं चूम सकती

《2》 **औ़रत** का अपने पीरो मुर्शिद से भी इसी त़रह़ पर्दा है जिस त़रह़ दीगर ना मह़रमों से। औ़रत अपने पीर का हाथ नहीं चूम सकती, अपने सर पर हाथ न फिरवाए, पीर साह़िब के हाथ पाउं भी न दाबे।

मर्द व औ़रत मुसा-फ़ह़ा नहीं कर सकते

《3》 **मर्द** व औ़रत आपस में हाथ नहीं मिला सकते।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** ''तुम में से किसी के सर में लोहे की कील ठोंक दी जाती इस से बेहतर है कि वोह किसी ऐसी औ़रत को छूए जो उस के लिये ह़लाल नहीं।''

(مُعْجَم کبیر ج ۲۰ ص ۲۱۱ حدیث ۴۸۶)

《4》 **औ़रत** अजनबी मर्द के जिस्म के किसी भी ह़िस्से को न छूए जब कि दोनों[2] में से कोई भी जवान हो उस को शह्‌वत हो सकती हो। अगर्चे इस बात का दोनों[2] को इत्मीनान हो कि शह्‌वत पैदा नहीं होगी। (**عالمگیری ج ۵ ص ۳۲۷**, बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 443)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابویعلی)

मर्द से चूड़ियां पहनना

﴾5﴿ **ना महरम** के हाथ से औरत का चूड़ियां पहनना गुनाह है। दोनों[2] गुनहगार हैं।

छोटे बच्चे का कौन सा हिस्सा छुपाए

﴾6﴿ **बहुत** छोटे बच्चे के लिये औरत (या'नी छुपाने का उज़्व) नहीं इस के बदन के किसी हिस्से को छुपाना फ़र्ज़ नहीं, फिर जब कुछ बड़ा हो गया तो उस के आगे और पीछे का मक़ाम छुपाना ज़रूरी है। दस[10] बरस से बड़ा हो जाए तो उस के लिये बालिग़ का सा हुक्म है। (رَدُّالْمُحتار ج۹ ص۶۰۲, बहारे शरीअत, जि. 3, स. 442)

महारिम के जिस्म की तरफ़ देखने के अहकाम

﴾7﴿ **मर्द** अपनी महारिम (या'नी वोह ख़वातीन जिन से रिश्ते के लिहाज़ से हमेशा के लिये निकाह हराम हो म-सलन वालिदा, बहन, ख़ाला, फूफी वग़ैरा) के सर, चेहरा, कान कन्धा, बाज़ू, कलाई, पिंडली और क़दम की तरफ़ नज़र कर सकता है जब कि दोनों में से किसी को शहवत का अन्देशा न हो।

(मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअत, जि. 3, स. 444, 445)

﴾8﴿ **मर्द** के लिये महारिम के पेट, करवट, पीठ, रान और घुटने की तरफ़ नज़र करना जाइज़ नहीं। (ऐज़न, स. 445) (येह हुक्म उस वक़्त है जब जिस्म के इन हिस्सों पर कोई कपड़ा न हो और अगर येह तमाम आ'ज़ा मोटे कपड़े से छुपे हुए हों तो वहां नज़र करने में हरज नहीं)

﴾9﴿ **महारिम** के जिन आ'ज़ा को देखना जाइज़ है उन को छूना भी जाइज़ है जब कि दोनों में से किसी को शहवत का अन्देशा न हो।

(बहारे शरीअत, जि. 3, स. 445)

मां के पाउं दबाना

﴾10﴿ **मर्द** अपनी मां के पाउं दबा सकता है। मगर रान उस वक़्त दबा सकता है जब कि कपड़े से छुपी हुई हो। मां की रान को भी बिला ह़ाइल छूना जाइज़ नहीं। (मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 445)

मां की क़दम बोसी की फ़ज़ीलत

﴾11﴿ **वालिदा** के क़दम को बोसा भी दे सकता है। ह़दीसे पाक में है : "जिस ने अपनी मां का पाउं चूमा तो ऐसा है जैसे जन्नत की चौखट को बोसा दिया।" (اَلْمَبْسُوط لِلسَّرَخْسِی ج۵ص۱۵۶)

इन रिश्तेदारों से पर्दा है

﴾12﴿ **तायाज़ाद,** चचाज़ाद, मामूंज़ाद, फूफीज़ाद, ख़ालाज़ाद, साली और बहनोई, भाबी और देवर, जेठ, चची, ताई, मुमानी, ख़ालू, फूफा, ले पालक बच्चा जिस को अय्यामे रज़ाअ़त[1] में दूध न पिलाया हो और अब मर्द व औ़रत के मुआ़-मलात समझने लगा हो मुंह बोले भाई बहन, मुंह बोले मां बेटे, मुंह बोले बाप बेटी, पीर और मुरी-दनी अल ग़रज़ जिन की आपस में शादी जाइज़ है उन का आपस में पर्दा है। हां ऐसी बुढ़िया जो निहायत ही बद शक्ल हो कि जिस को देखने से बिल्कुल शह्वत का शाइबा न हो उस से मर्द का पर्दा नहीं। इस के इ़लावा किसी औ़रत को देखने से शह्वत हो या न हो मर्द बिला इजाज़ते शर-ई नहीं देख सकता। जिन से हमेशा के लिये निकाह़ ह़राम है उन से पर्दा

1 : याद रहे ! बच्चे को (हिजरी सिन के ह़िसाब से) दो साल की उ़म्र तक दूध पिलाया जाए। इस के बा'द दूध पिलाना जाइज़ नहीं मगर ढाई साल की उ़म्र के अन्दर अन्दर औ़रत अगर अपना दूध पिला दे तो ह़ुरमते निकाह़ साबित हो जाएगी या'नी अब येह रज़ा-ई बेटा है इस से पर्दा नहीं।

नहीं । ''बहारे शरीअ़त'' में है कि औ़रत को शह्वत का शुबा भी हो तो अजनबी मर्द की त़रफ़ हरगिज़ नज़र न करे ।

(बहारे शरीअ़त, स. 443)

सास सुसर से पर्दा ?

﴾13﴿ **हुरमते** मुसा-हरत के सबब मर्द को अपनी सास से और औ़रत को अपने सुसर से पर्दे के मुआ़-मले में रिआ़यत ह़ासिल हो जाती है । हां दोनों में से कोई एक अगर जवान है तो पर्दा करना चाहिये येही मुनासिब है । (हुरमते मुसा-हरत की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 7 से ''मह़रमात का बयान'' मुला-ह़ज़ा फ़रमा लीजिये बल्कि निकाह़, त़लाक़, इद्दत, बच्चों की परवरिश वग़ैरा के बारे में मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये शादी से क़ब्ल ही और नहीं पढ़ा तो शादी के बा'द ही सही बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 7 और 8 ज़रूर ज़रूर ज़रूर पढ़ लीजिये ।)

औ़रत का चेहरा देखना

﴾14﴿ **औ़रत** का चेहरा अगर्चे औ़रत नहीं मगर फ़ितने के ख़ौफ़ के सबब ग़ैर मह़रम के सामने मुंह खोलना मन्अ़ है । इसी त़रह़ उस की त़रफ़ नज़र करना ग़ैर मह़रम के लिये जाइज़ नहीं और छूना तो और भी ज़ियादा मन्अ़ है ।

(دُرِّمُختار ج۲ ص۹۷, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 484)

बारीक पाजामा मत पहनिये

﴾15﴿ **बा'ज़** लोग बारीक कपड़े का पाजामा पहनते हैं जिस से रान की जिल्द का रंग चमक्ता है, इसे पहन कर नमाज़ नहीं होती ऐसा पाजामा बिला मक़्सदे शर-ई पहनना ह़राम है ।

दूसरे के खुले हुए घुटने देखना गुनाह है

﴾16﴿ **बा'ज़** लोग दूसरों के सामने घुटने बल्कि रानें खोले रहते हैं येह ह़राम है। (मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 481) उन की खुली हुई रान या घुटने की त़रफ़ नज़र करना भी जाइज़ नहीं। लिहाज़ा नीकर पहन कर खेलने और वरज़िश करने और ऐसों को देखने से बचना ज़रूरी है।

तन्हाई में बे ज़रूरत सत्र खोलना कैसा ?

﴾17﴿ **सत्रे** औ़रत हर ह़ाल में वाजिब है बिग़ैर किसी सह़ीह़ वजह के तन्हाई में खोलना भी जाइज़ नहीं लोगों के सामने और नमाज़ में तो सत्र बिल इज्माअ़ फ़र्ज़ है।

(دُرِّمُختار و رَدُّالمُحتار ج۲ ص۹۳, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 479 मुलख़्ख़सन)

इस्तिन्जा के वक़्त सत्र कब खोले ?

﴾18﴿ **इस्तिन्जा** करते वक़्त जब ज़मीन से क़रीब हो जाएं उस वक़्त सत्र खोलना चाहिये और ज़रूरत से ज़ियादा ह़िस्सा न खोलें। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 409) अगर पाजामे में ज़िप (zip) डलवा ली जाए तो पेशाब करने में बेह़द सहूलत हो सकती है कि इस त़रह़ बहुत कम सत्र खोलने की ज़रूरत पड़ेगी। मगर पानी से इस्तिन्जा करने में सख़्त एह़तियात़ करनी होगी। ज़िप बारीक वाली सब से ज़ियादा काम्याब है।

नाफ़ से ले कर घुटने तक का ह़िस्सा

﴾19﴿ **मर्द** दूसरे मर्द के नाफ़ से ले कर घुटने तक का कोई ह़िस्सा नहीं देख सकता और औ़रत भी दूसरी औ़रत के नाफ़ से घुटने तक का कोई ह़िस्सा नहीं देख सकती। औ़रत औ़रत के बाक़ी आ'ज़ा

पर नज़र कर सकती है जब कि शह्वत का अन्देशा न हो।

(ऐज़न, जि. 3, स. 442, 443)

पर्दे के बाल दूसरों की नज़र से बचाइये

﴾20﴿ **मूए** ज़ेरे नाफ़ मूंड कर ऐसी जगह फेंकना दुरुस्त नहीं जहां दूसरों की नज़र पड़े। (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 449)

औ़रत की कंघी के बाल

﴾21﴿ **औ़रतों** के लिये लाज़िम है कि कंघा करने या सर धोने में जो बाल निकलें उन्हें कहीं छुपा दें कि ग़ैर मर्द की उन पर नज़र न पड़े। (ऐज़न, स. 449)

﴾22﴿ **हैज़** का लत्ता ऐसी जगह हरगिज़ न फेंकें जहां दूसरों की नज़र पड़े।

औ़रत के पाउं की झांझन की आवाज़

﴾23﴿ **ह़दीस** शरीफ़ में है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस क़ौम की दुआ़ नहीं क़बूल फ़रमाता जिन की औ़रतें **झांझन** पहनती हों।" **(التفسيرات الاحمدیه، ص٥٦٥)** ह़दीसे पाक में जिस बाजेदार झांझन पहनने की मुमा-न-अ़त की गई उस से मुराद घुंगरू वाला ज़ेवर है। **इस से समझना चाहिये कि जब ज़ेवर की आवाज़ अ़-दमे क़बूले दुआ़ (या'नी दुआ़ क़बूल न होने) का सबब है तो ख़ास औ़रत की (अपनी) आवाज़ (का बिला इजाज़ते शर-ई ग़ैर मर्दों तक पहुंचना) और उस की बे पर्दगी कैसी मूजिबे ग़ज़बे इलाही होगी, पर्दे की त़रफ़ से बे परवाई तबाही का सबब है। आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बजने वाले ज़ेवर के इस्ति'माल के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं : बजने वाला ज़ेवर औ़रत के लिये इस ह़ालत में जाइज़ है कि ना मह़रमों

म-सलन ख़ाला मामूं चचा फूफी के बेटों, जेठ, देवर, बहनोई के सामने न आती हो न उस के ज़ेवर की झन्कार (या'नी बजने की आवाज़) ना मह़रम तक पहुंचे । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا لِبُعُوْلَتِهِنَّ..... (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और अपना सिंगार ज़ाहिर न करें मगर अपने शोहरों पर...اِلخ) (پ۱۸،النّور:۳۱) और फ़रमाता है : وَلَا يَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِيْنَ مِنْ زِيْنَتِهِنَّ (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ज़मीन पर पाउं ज़ोर से न रखें कि जाना जाए उन का छुपा हुवा सिंगार) (پ۱۸،النّور:۳۱) **फ़ाएदा :** येह आयते करीमा जिस त़रह़ ना मह़रम को गहने (या'नी ज़ेवर) की आवाज़ पहुंचना मन्अ़ फ़रमाती है यूंही जब आवाज़ न पहुंचे (तो) उस का पहनना औ़रतों के लिये जाइज़ बताती है कि धमक कर पाउं रखने को मन्अ़ फ़रमाया न कि पहनने को । (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 128 मुलख़्ख़सन) इस से वोह इस्लामी बहनें दर्से इ़ब्रत ह़ासिल करें जो ख़रीदारी, मह़ल्ला दारी वग़ैरा में ग़ैर मर्दों से बे तकल्लुफ़ी के साथ गुफ़्त-गू करती हैं । उन्हें तो घर की चार दीवारी में भी आहिस्ता आवाज़ निकालनी चाहिये ताकि दरवाज़े के बाहर वाले लोग या पड़ोसी वग़ैरा आवाज़ न सुनने पाएं । बच्चों पर भी गरजते बरसते वक़्त येही एह़तियात़ रखें ।

औ़रत पूरी आस्तीन का कुरता पहने

24 **औ़रत** पर्दे से हाथ बढ़ा कर ग़ैर मर्द को इस त़रह़ कोई चीज़ न दे कि उस की कलाई (हथेली और कोहनी के दरमियान का ह़िस्सा कलाई कहलाता है) नंगी हो । (आज कल उ़मूमन ऐसा ही होता है ।

अगर मर्द ने क़स्दन कलाई की त़रफ़ नज़र की तो वोह भी गुनहगार है। लिहाज़ा ऐसे मौक़अ़ पर कलाई किसी मोटे कपड़े से छुपाना ज़रूरी है) इस्लामी बहनें पूरी आस्तीन का कुरता पहनें नीज़ दस्ताने और जुराबें भी इस्ति'माल फ़रमाएं।

शर-ई पर्दे वाली को देखना कैसा ?

﴾25﴿ **बयान** कर्दा शर-ई पर्दे में मल्बूस ख़ातून को अगर मर्द बिला शह्वत देखे तो मुज़ा-यक़ा नहीं कि यहां औ़रत को देखना नहीं हुवा बल्कि येह उन कपड़ों को देखना हुवा। हां अगर चुस्त कपड़े पहने हों कि बदन का नक़्शा खिंच जाता हो म-सलन चुस्त पाजामे में पिंडली और रान वग़ैरा की हैअत नज़र आती हो तो इस सूरत में नज़र करना जाइज़ नहीं।

(मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 448)

औ़रत के बालों को देखना ह़राम है

﴾26﴿ **अगर** औ़रत ने किसी बारीक कपड़े का दुपट्टा पहना है जिस से बाल या बालों की सियाही कान या गरदन नज़र आती हो तो उस की त़रफ़ नज़र करना ह़राम है। (ऐज़न) इस त़रह़ के बारीक दुपट्टे में औ़रत की नमाज़ भी नहीं होती।

﴾27﴿ **आज** कल مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ औ़रतें खुले बालों के साथ बाहर निकलतीं कलाइयां और बाल खोले गाड़ियां चलातीं और स्कूटर के पीछे अपनी चुटिया लहराती हुई बैठती हैं। उन के बालों या कलाइयों पर अचानक पहली नज़र मुआ़फ़ है। जब कि फ़ौरन फेर ली और क़स्दन उस त़रफ़ देखना या नज़र न हटाना ह़राम है।

ह़िकायत

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى ने इस ख़ौफ़ से अपनी स्कूटर बेच डाली कि रास्ते में बे पर्दा औ़रतें ब कसरत होती हैं, ड्राइविंग में निगाहों की ह़िफ़ाज़त मुम्किन नहीं क्यूं कि न देखे तो ह़ादिसे का ख़त़रा और देखना तो गवारा नहीं। **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

﴾28﴿ **मर्द** अज्नबिय्या औ़रत के किसी भी ह़िस्से को बिला इजाज़ते शर-ई न देखे।

मर्द से औ़रत कब इलाज करवा सकती है ?

﴾29﴿ **अगर** कोई त़बीबा न मिले तो ब अम्रे मजबूरी औ़रत त़बीब को ह़स्बे ज़रूरत अपने जिस्म का बीमारी वाला ह़िस्सा दिखा सकती है और अब त़बीब ज़रूरतन छू भी सकता है। ज़रूरत से ज़ियादा जिस्म हरगिज़ न खोले।

ग़ैर औ़रत के साथ तन्हाई

﴾30﴿ **ग़ैर** मर्द और ग़ैर औ़रत का एक मकान में तन्हा होना ह़राम है। हां ऐसी बद सूरत बुढ़िया कि जो शह्वत के क़ाबिल न हो उस को देखना और उस के साथ तन्हाई जाइज़ है।

अम्रद के साथ तन्हाई

﴾31﴿ **मर्द** का "अम्रद" को शह्वत की नज़र से देखना ह़राम है। शह्वत आती हो तो उस के साथ एक मकान में तन्हाई ना जाइज़ है। बोसा लेने या चिपटा लेने की ख़्वाहिश पैदा होना शह्वत की

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में **50** बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसा–फ़ह़ा करूं(या'नी हाथ मिलाऊं)गा। (ابن بشکوال)

अ़लामात में से है।[1]

तम्बीह : माली, मज़्दूर, चोकीदार, ड्राइवर और घर के मुलाज़िम से भी बे पर्दगी ह़राम है।

(पर्दे की तफ़्सीली मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ किताब ''पर्दे के बारे में सुवाल जवाब'' पढ़ लीजिये।)

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

ग़मे मदीना, बक़ीअ़, मग़्फ़िरत और बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा के पड़ोस का त़ालिब

7 ज़ुल ह़िज्जा 1434 सि.हि.
13-10-2013

آخذ و مراجع

مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ	کتاب
دارالمعرفہ بیروت	الزواجر عن اقتراف الکبائر	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	قرآنِ مجید
دارالکتب العلمیہ بیروت	المبسوط	پشاور	تفسیراتِ احمدیہ
دارالمعرفۃ بیروت	ردالمحتار	دارابن حزم بیروت	مسلم
دارالفکر بیروت	عالمگیری	داراحیاء التراث العربی بیروت	ابوداؤد
رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور	فتاوٰی رضویہ	دارالفکر بیروت	ترمذی
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	بہارِ شریعت	داراحیاء التراث العربی بیروت	معجم کبیر
ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور	مراٰۃ المناجیح	دارالکتب العلمیہ بیروت	الفردوس بمأثور الخطاب
☆☆☆	☆☆☆	دارالکتب العلمیہ بیروت	تاریخ بغداد

1: मज़ीद मा'लूमात के लिये **मक-त-बतुल मदीना** का मत़्बूआ़ रिसाला ''क़ौमे लूत़ की तबाह कारियां'' (सफ़ह़ात 45) पढ़ लीजिये।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे । (ترمذی)

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़ह	उ़न्वान	सफ़ह
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	मां की क़दम बोसी की फ़ज़ीलत	11
औ़रत ख़ुश्बू लगा कर बाहर न निकले	2	इन रिश्तेदारों से पर्दा है	11
बे पर्दगी की होलनाक सज़ा	3	सास सुसर से पर्दा ?	12
ख़ौफ़नाक जानवर	3	औ़रत का चेहरा देखना	12
कमज़ोर बहाने	4	बारीक पाजामा मत पहनिये	12
पचास साठ सांप	5	दूसरे के खुले हुए घुटने देखना गुनाह है	13
ख़ौफ़नाक गढ़ा	6	तन्हाई में बे ज़रूरत सत्र खोलना कैसा ?	13
ख़बरदार !	7	इस्तिन्जा के वक़्त सत्र कब खोले ?	13
बेटा गया तो क्या हुवा, ह़या तो बाक़ी है	8	नाफ़ से ले कर घुटने तक का ह़िस्सा	13
बे पर्दगी कोई छोटी मुसीबत नहीं !	8	पर्दे के बाल दूसरों की नज़र से बचाइये	14
31 म-दनी फूलों का गुलदस्ता	9	औ़रत की कंघी के बाल	14
मुरी-दनी पीर साह़िब का हाथ नहीं चूम सकती	9	औ़रत के पाउं की झांझन की आवाज़	14
		औ़रत पूरी आस्तीन का कुरता पहने	15
मर्द व औ़रत मुसा-फ़ह़ा नहीं कर सकते	9	शर-ई पर्दे वाली को देखना कैसा ?	16
मर्द से चूड़ियां पहनना	10	औ़रत के बालों को देखना ह़राम है	16
छोटे बच्चे का कौन सा ह़िस्सा छुपाए	10	ह़िकायत	17
मह़ारिम के जिस्म की त़रफ़ देखने के अह़काम	10	मर्द से औ़रत कब इ़लाज करवा सकती है ?	17
		ग़ैर औ़रत के साथ तन्हाई	17
मां के पाउं दबाना	11	अम्रद के साथ तन्हाई	17

الحمد لله رب العلمين والصلوة والسلام على سيد المرسلين اما بعد فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم بسم الله الرحمن الرحيم

फ़रमाने बीबी फ़ातिमा رضی اللہ تعالٰی عنہا

हज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा**, शेरे खुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने हज़रते फ़ातिमा رضی اللہ تعالٰی عنہا से पूछा : औरतों के हक़ में सब से बेहतर क्या है ? अ़र्ज़ की : न वोह किसी ना महरम शख़्स को देखें और न कोई ना महरम उन्हें देखें। (حلية الأولياء ج٢ ص٥١ ملخصاً)

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बगीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net